Shri Hanuman Mantra Sadhna & Kavach

।। श्री हनुमान मंत्र साधना एवं कवच ।।

Sumit Girdharwal
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.info
www.yogeshwaranand.org

भगवान शिव के ग्यारहवे रुद्रावतार हनुमानजी कलियुग के जाग्रत देवता हैं जो शीघ्र ही अपने भक्तों पर कृपा करते हैं, लेकिन बस आवश्यकता है सही विधि से उनकी साधना करने की ।

हनुमान जी ने जिस प्रकार श्री राम जी के समस्त कार्यो को सम्पन्न किया था उसी प्रकार वो अपने भक्तों के सभी कार्यो को सम्पन्न करते हैं।

हनुमान उपासना से साधक समस्त विघ्न व्याधियों पर विजय प्राप्त कर सकता है। हनुमान जी को नवग्रहों ने वरदान दिया था कि वो उनके भक्तों को कभी भी परेशान नही करेगें इसीलिए शनि-राहु आदि ग्रहों की महादशा में इनकी साधना से बहुत अधिक लाभ मिलता है। शनि देव के गुरू भगवान शिव हैं एवं हनुमान जी भगवान शिव के अवतार, इसीलिए शनिदेव शिव भक्तों एवं हनुमान भक्तों पर विशेष कृपा करते हैं।

प्रस्तुत हनुमत् मंत्र बहुत ही प्रभावशाली है जिसे श्रीकृष्ण ने महाभारत काल में अर्जुन को प्रदान किया था। इसी मंत्र के प्रभाव से अर्जुन ने अजेय योद्धाओं पर विजय प्राप्त की थी। इस मंत्र के प्रभाव से साधक जन किसी भी प्रकार की तंत्रबाधा, रोग, शत्रुबाधा, नजर, कोर्ट-कचहरी एवं अन्य संकटों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

आसन - लाल

माला - रूद्राक्ष अथवा लाल मूंगा

दिन - २१, ३१, ४१

जप संख्या - १,२५,०००

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
Sumitgirdharwal@yahoo.com , shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

मुख्य नियम - ब्रहमचर्य पालन एवं शुद्ध शाकाहार

गुरू दीक्षा - गुरू मुख से मंत्र लेकर ही जप करें ।

आसन पर बैठकर सर्वप्रथम गुरूदेव का ध्यान एवं पूजन करें । उसके पश्चात गणेश जी का ध्यान एवं पूजन करके श्री रामचन्द्र एवं माता सीता का ध्यान एवं पूजन करें । यदि हो सके तो मंत्र जप से पहले सुन्दरकाण्ड का पाठ करें । इसके पश्चात भगवान शिव का ध्यान एवं पूजन करें और कम से कम एक माला शिव पंचाक्षरी मंत्र 'नमः शिवाय' की करें।

इसके पश्चात हाथ में पुष्प लेकर इस प्रकार ध्यान करें-

मनोजवं मारुततुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरण प्रपद्ये।।१।।

कर्णिकारसुवर्णाभं वर्णनीयं गुणोत्तमम्।

अर्णवोल्लङ्घनोद्युक्तं तूर्णं ध्यायामि मारुतिम्।।२।।

ध्यान करने के पश्चात हनुमान कवच का पाठ करें -

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
Sumitgirdharwal@yahoo.com , shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

।।श्रीमारुतिकवचम्।।

।।सन्तकुमार उवाच।।

कार्तवीर्यस्य कवचं कथितं ते मुनीश्वर। मोहविध्वंसनं जैत्रं मारुतेः कवचं शृणु।१।
यस्य संधारणात् सद्यः सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः। भूतप्रेतारिजं दुःखं नाशमेति न संशयः।२।
एकदाहं गतो द्रष्टुं रामं रमयतां वरम्। आनन्दवनिकासंस्थं ध्यायन्तं स्वात्मनः पदम्।३।
तत्र रामं रमानाथं पूजितं त्रिदशेश्वरैः। नमस्कृत्य तदादिष्टमासनं स्थितवान् पुरः।४।
तत्र सर्वं मया वृत्तं रावणस्य वधान्तकम्। पृष्टं प्रोवाच राजेन्द्रः श्रीरामः स्वयमादरात्।५।
ततः कथान्ते भगवान् मारुतेः कवचं ददौ। मह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि न प्रकाश्यं हि कुत्रचित्।६।

भविष्यदेतन्निर्दिष्टं बालभावेन नारद। श्रीरामेणाञ्जनासूनोर्भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्।७।

।।कवचम्।।

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः। पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः सौम्ये सागरतारकः।८।
ऊर्ध्वं पातु कपिश्रेष्ठः केसरिप्रियनन्दनः। अधस्ताद्विष्णुभक्तस्तु पातु मध्ये च पावनिः।९।

लङ्काविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम्। सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः।१०।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
Sumitgirdharwal@yahoo.com , shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम्। नेत्रो छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः।११।

कपोलौ कर्णमूले च पातु श्रीरामकिङ्करः। नासाग्रमञ्जनासनुः पातु वक्त्रं हरीश्वरः।१२।

पातु कण्ठं तु दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरारिजित्। भुजौ पातु महातेजाः करौ च चरणायुधः।१३।

नखान् नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः। वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः।१४।

लङ्कानिभर्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम्। नाभिं श्रीरामभक्तस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः।१५।

गुह्यं पातु महाप्राज्ञः सक्थिनी अतिथिप्रियः। ऊरू च जानुनी पातु लङ्काप्रासादभन्जनः।१६।

जंघे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः। अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसंनिभः।१७।

अङ्गानि पातु सत्त्वाढ्यः पातु पादाङ्गुलीः सदा। मुखाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान्।१८।

दिवारात्रौ त्रिलोकेषु सदागतिसुतोऽवतु। स्थितं व्रजन्तमासीनं पिबन्तं जक्षतं कपिः।१९।

लोकोत्तरगुणः श्रीमान् पातु त्र्यमबकसम्भवः। प्रमत्तमप्रमत्तं वा श्यानं गहनेऽम्बुनि।२०।

स्थलेऽन्तरिक्षे ह्यग्नौ वा पर्वते सागरे द्रुमे। संग्रामे संकटे घोरे विराड्रूपधरोऽवतु ।२१।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
Sumitgirdharwal@yahoo.com , shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

डाकिनीशाकिनीमारीकालरात्रिमरीचिकाः। शयानं मां विभुः पातु
पिशाचोरगराक्षसीः।२२।
दिव्यदेहधरो धीमान् सर्वसत्त्वभयंकरः। साधकेन्द्रावनः शश्वत्पातु सर्वत एव
माम्।२३।
यद्रूपं भीषणं दृष्टवा पलायन्ते भयानकाः। स सर्वरूपः सर्वज्ञः
सृष्टिस्थितिकरोऽवतु।२४।
स्वयं ब्रह्मा स्व्यं विष्णुः साक्षाद्देवो महेश्वरः। सूर्यमण्डलगः श्रीदः पातु
कालत्रयेऽपि माम्।२५।

यस्य शब्दमुपाकर्ण्य दैत्यदानवराक्षसाः। देवा मनुष्यास्तिर्यञ्चः स्थावरा

जङ्गमास्तथा।२६।
सभया भयनिर्मुक्ता भवन्ति स्वकृतानुगाः। यस्यानेककथाः पुण्याः श्रूयन्ते
प्रतिकल्पके।२७।
सोऽवतात् साधकश्रेष्ठं सदा रामपरायणः। वैधात्रधातृप्रभति
यत्किंचिद्दृश्यतेऽत्यलम्।२८।

विद्धि व्याप्तं यथा कीशरूपेणानञ्जनेन तत्। यो विभुः सोऽहमेषोऽस्वीयः
स्वयमणुर्बुहत्।२९।
ऋग्यजुःसामरूपश्च प्रणवस्त्रिवृदध्वरः। तस्मैस्वस्मै च सर्वस्मै
नतोऽस्म्यात्मसमाधिना।३०।
अनेकानन्तब्रह्माण्डधृते ब्रह्मस्वरूपिणे। समीरणात्मने तस्मै
नतोऽस्मयात्मस्वरूपिणे।३१।
नमो हनुमते तस्मै नमो मारुतसूनवे। नमः श्रीरामभक्ताय श्यामाय महते
नमः।३२।

नमो वानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे। लङ्काविदहनायाथ महासागरतारिणे।३३।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
Sumitgirdharwal@yahoo.com , shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च। रावणान्तनिदानाय नमः
सर्वोत्तरात्मने।३४।
मेघनादमखध्वंसकारणाय नमो नमः। अशोकवनविध्वंसकारिणे जयदायिने।३५।

वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने। वनपालशिरछेत्रे लङ्काप्रसादभञ्जिने।३६।

ज्वलत्काञ्चनवर्णाय दीर्घलाङ्गूलधारिणे। सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते
नमः।३७।

अक्षस्य वधकर्त्रे च ब्रह्मशस्त्रनिवारिणे। लक्ष्मणाङ्गमहाशक्तिजातक्षतविनाशिने।३८।
रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय नमो नमः। ऋक्षवानरवीरौघप्रसादाय नमो
नमः।३९।
परसैन्यबलघ्नाय शस्त्रास्त्रघ्नाय ते नमः। विषघ्नाय द्विषघ्नाय भयघ्नाय नमो
नमः।४०।
महारिपुभयघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे। परप्रेरितमन्त्राणां यन्त्राणां
स्तम्भकारिणे।४१।
पयःपाषाणतरणकारणाय नमो नमः। बालार्कमण्डलग्रासकारिणे दुःखहारिणे।४२।

नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च। विहङ्गमाय शर्वाय वज्रदेहाय ते नमः।४३।
प्रतिग्रामस्थितायाथ भूतप्रेतवधार्थिने। करस्थशैलशस्त्राय रामशस्त्राय ते नमः।४४।
कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च। दक्षिणाशाभास्कराय सतां
चन्द्रोदयात्मने।४५।
कृत्याक्षतव्यथाघ्नाय सर्वक्लेशहराय च। वाम्याज्ञापार्थसंग्रामसख्यसंजयकारिणे।४६।
भक्तानां दिव्यवादेषु संग्रामे जयकरिणे। किल्किलाबुबुकाराय घोरशब्दकराय
च।४७।
सर्वाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे भयहारिणे। सदा वनफलाहारसंतृप्ताय
विशेषतः।४८।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
Sumitgirdharwal@yahoo.com , shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

महार्णवशिलाबद्धसेतुबन्धाय ते नमः। इत्येतत्कथितं विप्र मारुतेः कवचं शिवम्।४९।
यस्मै कस्मै न दातव्यं रक्षणीयं प्रयत्नतः। अष्टगन्धैर्विलिख्याथ कवचं धारयेत्तु यः।५०।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ जयस्तस्य पदे पदे। किं पुनर्बहुनोक्तेन साधितलक्षमादरात्।५१।
प्रजप्तमेतत्कवचमसाध्यं चापि साधयेत्।५२।

उपरोक्त कवच के स्थान पर यदि आपके पास कोई अन्य कवच जैसे पंचमुखी हनुमान कवच अथवा सप्तमुखी हनुमान कवच हैं, तो आप उसका भी जप कर सकतें हैं

इसके पश्चात नीचे दिये गये मंत्र का गुरूदीक्षा लेकर संकल्पानुसार जप करें

।। मंत्र ।।

ॐ नमो भगवते हनुमते महारुद्रात्मकाय हुं फट् स्वाहा

जप पूरा होने के पश्चात अपने सीधे हाथ में जल लेकर अपने द्वारा की गयी पूजा को हनुमान जी को समर्पित करें एवं जल को हनुमान प्रतिमा अथवा यंत्र पर अर्पित करें।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
Sumitgirdharwal@yahoo.com , shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

इसके बाद प्रभु से अपनी गलती के लिए क्षमा प्रार्थना करें -

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति ताँ मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।।
आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्। पूजां चैव न जानानि क्षमस्व परमेश्वर।।

....

If you want to receive these articles on your email please send us a request on sumitgirdharwal@yahoo.com

Our Books -

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi

2. Mantra Sadhana

3. Shodashi Mahavidya

4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

Param Devi Sukt of Ma Tripursundari
मां त्रिपुरसुन्दरी का परम देवी-सूक्त

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.net
www.yogeshwaranand.org

भगवती महात्रिपुर सुन्दरी का यह स्तोत्र अत्यन्त ही गोपनीय एवं प्रमाणित है, लेकिन यह गुरू-गम्य है। अर्थात् गुरू-मुख से प्राप्त करने के उपरान्त ही यह फलदायी होता है। यदि इस सूक्त का पाठ निरंतर तीन सालों तक किया जाये तो निश्चित रूप से साधक को भगवती त्रिपुर सुंदरी का साक्षात्कार होता है। इस स्तोत्र का नित्य पाठ करने वाला साधक समस्त सिद्धियों का स्वामी, सर्वत्र विजय प्राप्त करने वाला एवं संसार को वश में करने वाला हो जाता है। धन एवं सभी ऐश्वर्य उसके दास हो जाते हैं। उसकी जिह्वा पर साक्षात मां सरस्वती का निवास हो जाता है। उपरोक्त

समस्त इच्छाएं रखने वाले साधक को चाहिए कि वह श्री गुरू-चरणों में बैठकर इस स्तोत्र को प्रयत्नपूर्वक प्राप्त करे । जो साधक श्री विद्या में दीक्षित नही हैं वो सर्वप्रथम श्री विद्या की दीक्षा अपने गुरूदेव से प्राप्त करें ।

विनियोग- ॐ अस्य श्री परमदेवता सूक्त माला मन्त्रस्य मार्कण्डेय सुमेधादि- ऋषयः, गायत्र्यादि नानाविधानीच्छन्दांसि, त्रिशक्ति-रूपिणी चण्डिका देवता, ऐं बींज सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं चतुर्विध पुरूषार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

इसके उपरान्त ध्यान करें -

ध्यान

ॐ योगाढ्यामरकाय निर्गत महत्तेजः समुत्पत्तिनी ।
भास्वत्पूर्ण शशांक चारू वदना नीलोल्लसद् भ्रूलता ।।
गौरोत्तुंग-कुचद्वया तदुपरि स्फूर्जप्रभामण्डला ।
बन्धूकारूणकाय-कान्तिरवताच्छ्री चण्डिका सर्वतः।।

पाठ

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें ह्सौं ह्सौः जय जय महालक्ष्मि जगदाधारबीजे सुरासुर त्रिभुवन निधाने दयांकुरे सर्वदेवतेजो रूपिणि महामहा महिमे महा महा रूपिणि महामहामाये महामायास्वरूपिणि विरिंच संस्तुते विधिवरदे चिदानन्दे (विद्यानन्दे) विष्णुदेहावृते महामोह मोहिनि मधुकैटभ जिंघासिनि नित्यवरदान तत्परे महासुधाब्धिवासिनि महामहत्तेजोधारिणि सर्वाधारे सर्वकारणकारणे आदित्यरूपे इन्द्रादिनिखिलनिर्जरसेविते सामगानगायिनि पूर्णोदय कारिणि विजये

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com,
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

जयन्ति अपराजिते सर्वसुन्दरि सक्तांशुके सूर्यकोटिसंकाशे चन्द्रकोटिसुशीतले अग्निकोटि दहनशीले यमकोटिक्रूरे वायुकोटिवहनसुशीले ओंकारनाद चिद्रूपे निगमागममार्गदायिनि महिषासुरनिर्दलनि धूम्रलोचनवधपरायणे चण्डमुण्डादि शिरश्छेदिनि रक्तबीजादि रूधिरशोषिणि रक्तपानप्रिये महायोगिनि भूतबेताल भैरवादितुष्टि विधायिनि शुम्भनिशुम्भशिरश्छेदिनि निखिलासुरदलखादिनि त्रिदशराज्यदायिनि सर्वस्त्रीरत्नरूपिणि दिव्यदेहे निर्गुणे सदसद्रूपधारिणि स्कन्दवरदे भक्तत्राणतत्परे वरवरदे सहस्रारे दशशताक्षरे अयुताक्षरे सप्तकोटि चामुण्डारूपिणि नवकोटिकात्यायनिरूपिणि अनेकशक्त्या लक्ष्यालक्ष्य स्वरूपे इन्द्राणि ब्रह्माणि रूद्राणि कौमारि वैष्णवि वाराहि शिवदूति ईशानि भीमे भ्रमरि नारसिंहि त्रयस्त्रिंशत्कोटि दैवते अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायिके चतुरशीतिलक्षमुनिजनसंस्तुते सप्तकोटि मन्त्रस्वरूपे महाकालरात्रिप्रकाशे कलाकाष्ठादिरूपिणि चतुर्दशभुवनाविर्भावकारिणि गरूडगामिनि क्रौंकार-ह्रौंकार ह्रींकार-श्रींकार-क्षौंकार-जूंकार-सौंकार-ऐंकार-क्लींकार-ह्क्लींकार-ह्क्लांकार-हौंकार-नानाबीज-मन्त्रराज-विराजित सकलसुन्दरीगणसेवितचरणारविन्दे श्री-महारात्रि-त्रिपुरसुन्दरी-कामेशदयिते करूणारसकल्लोलिनि कल्पवृक्षाधः स्थिते चिन्तामणिद्वीपावस्थित-मणिमन्दिरनिवासे चापिनि खड्गिनि चक्रिणि गदिनि शंखिनि पद्मिनि निखिल भैरवाराधिते समस्तयोगिनिचक्रपरिवृते कालि कंकालि तारे तोतुले सुतारे ज्वालामुखि छिन्नमस्तके भुवनेश्वरि त्रिपुरे त्रिलोक जननि विष्णुवक्षः स्थलालंकारिणि अजिते अमिते अपराजिते अनौपमचरिते गर्भवासादि दुःखापहारिणि मुक्तिक्षेत्राधिष्ठायिनि शिवे शान्ति कुमारि देवि

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com,
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

देवीसूक्तसंस्तुते महाकालि महालक्ष्मि महासरस्वति त्रयी विग्रहे प्रसीद प्रसीद सर्वमनोरथान् पूरय पूरय सर्वारिष्ट-विघ्नांश्छेदय छेदय सर्वग्रहपीडाज्वरोग्रभयः विध्वंसय विध्वंसय सद्यस्त्रिभुवन जीवजातं वशमानय वशमानय मोक्षमार्गं दर्शय दर्शय ज्ञानमार्गं प्रकाशय प्रकाशय अज्ञानतमो निरसय निरसय धनधान्याभिवृद्धिं कुरू कुरू सर्वकल्याणानि कल्पय कल्पय मां रक्ष रक्ष मम वज्रशरीरं साधय साधय ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा।

....

श्री विद्या ललिता त्रिपुर सुन्दरी धन, ऐश्वर्य, भोग एवं मोक्ष की अधिष्ठाता देवी हैं। अन्य विद्याओं की उपासना में या तो भोग मिलता है या फिर मोक्ष, लेकिन श्री विद्या का उपासक जीवन पर्यन्त सारे ऐश्वर्य भोगते हुए अन्त में मोक्ष को प्राप्त करता है। इनकी उपासना तंत्र शास्त्रों में अति रहस्यमय एवं गुप्त रूप से प्रकट की गयी है। पूर्व जन्म के विशेष संस्कारों के बलवान होने पर ही इस विद्या की दीक्षा का योग बनता है। ऐसे बहुत ही कम लोग होते हैं जिन्हे इस जीवन में यह उपासना करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। मुख्य रूप से इनके तीन स्वरूपों की पूजा होती है। प्रथम आठ वर्षीया स्वरूप बाला त्रिपुरसुन्दरी, द्वितीय सोलह वर्षीया स्वरूप षोडशी, तृतीय युवा अवस्था स्वरूप ललिता त्रिपुरसुन्दरी। श्री विद्या साधना में क्रम दीक्षा का विधान है एवं सर्वप्रथम बाला सुन्दरी के मंत्र की दीक्षा साधको को दी जाती है।

यदि आप ये साधना करना चाहते हैं तो हमसे सम्पर्क कर सकते है।

हमारे शास्त्रों में करोड़ो मंत्र हैं लेकिन हर मंत्र आपके लिए सही नही है। शिष्य के लिए कौन सा मंत्र सही है इसका निर्णय केवल गुरू ही कर सकता है। इसलिए आप केवल अपने आप को गुरू को समर्पित कर दीजिए, इसके बाद गुरू स्वयं आपको सही राह दिखायेगा।

यदि आपको हमारे द्वारा लिखे गये लेख पंसद है तो कृपया हमें अपनी ईमेल आईडी अवश्य भेजें । उसके पश्चात हमारे द्वारा लिखे सभी लेख हम आपको सीधे आपकी ईमेल पर ही भेज देंगें। हमारा ईमेल है –
sumitgirdharwal@yahoo.com

People, who are unable to read the Hindi or Sanskrit & want to read our articles, please send your request for the English translation with the article name & its link to sumitgirdharwal@yahoo.com. Based on the number of request for the particular article we will try to translate it into English as soon as possible.

Our Books -

1. **Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**

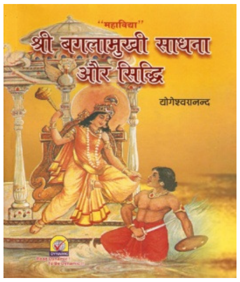

2. **Mantra Sadhana**

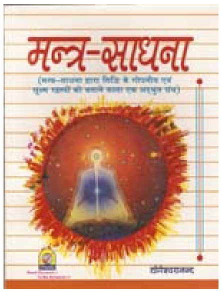

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

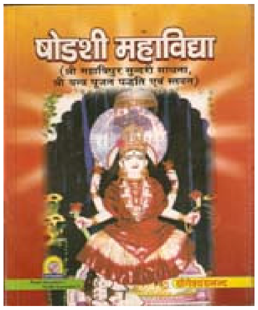

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com,
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

श्री बगलामुखी साधना रहस्य का प्रकाशन जल्द ही किया जा रहा है। यह पुस्तक लगभग ७०० पृष्ठ की है जिसमें मां पीताम्बरा की साधना की पूर्ण विधि दी गयी है। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए Rs 680/= नीचे लिखे अकाउण्ट में जमा करायें

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094

Support & Feedback

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content regarding Das Mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. We need your support to complete this task

Requirement -

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Font chanakya) or Microsoft Office (Font Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

Pashupatastra Mantra Sadhna Evam Siddhi
पशुपतास्त्र मंत्र साधना एवं सिद्धि

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.net
www.yogeshwaranand.org

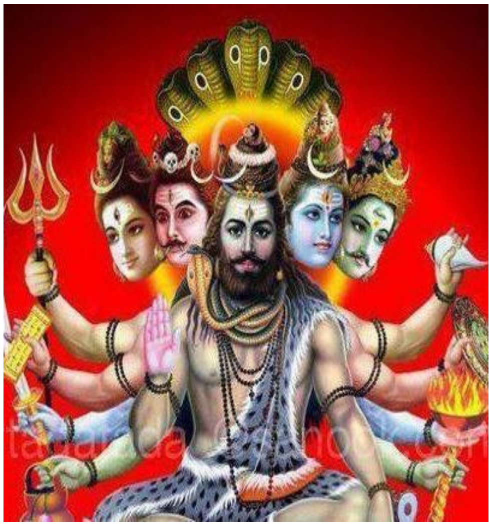

ब्रह्मांड में तीन अस्त्र सबसे बड़े हैं - पशुपतास्त्र, नारायणास्त्र एवं ब्रह्मास्त्र इनमें से यदि कोई एक भी अस्त्र मनुष्य को सिद्ध हो जाये तो उस व्यक्ति के सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं। लेकिन इनकी सिद्धि प्राप्त करना इतना सरल नही है। यदि आपमें कड़ी साधना करने का साहस नही है एवं धैर्य नही है तो ये साधना आपके लिए नही है।

मंत्र - ऊँ श्लीं पशु हुं फट्।

विनियोगः- ऊँ अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छंदः, पशुपतास्त्ररूप पशुपति देवता, सर्वत्र यशोविजय लाभार्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यासः -

ऊँ हुं फट् हृदयाय नमः।
श्लीं हुं फट् शिरसे स्वाहा।
पं हुं फट् शिखायै वषट्।
शुं हुं फट् कवचाय हुं।
हुं हुं फट् नेत्रत्रयाय वौषट्।
फट् हुं फट् अस्त्राय फट्।

ध्यान

मध्याह्नार्कसमप्रभं शशिधरं भीमाट्टहासोज्ज्वलम्
त्र्यक्षं पन्नगभूषणं शिखिशिखाश्मश्रु-स्फुरन्मूर्द्धजम् ।
हस्ताब्जैस्त्रिशिखं समुद्गरमसिं शक्तिादधानं विभुम्
दंष्ट्रभीम चतुर्मुखं पशुपतिं दिव्यास्त्ररूपं स्मरेत् ।।

विधि : सर्वप्रथम अपने गुरूदेव से इस मंत्र की दीक्षा प्राप्त करें। इस मंत्र का पुरश्चरण ६ लाख जप करने से होता है। उसका दशांश होम, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन एवं उसका दशांश ब्राह्मण भोज होता

है।

इस मंत्र के साथ में पाशुपतास्त्र स्तोत्र का पाठ भी अवश्य करना चाहिए। इस पाशुपत-मंत्र की एक बार आवृति करने से ही यह मनुष्य सम्पूर्ण विघ्नों का नाश कर सकता है, सौ आवृतियों से समस्त उत्पातों को नष्ट कर सकता है।

इस मंत्र द्वारा घी और गुग्गुल के होम से मनुष्य असाध्य कार्यो को भी सिद्ध कर सकता है इस पाशुपतास्त्र-मंत्र के पाठमात्र से समस्त क्लेशो की शांति हो जाती है।

।। पाशुपतास्त्र स्तोत्रम् ।।

ॐ नमो भगवते महापाशुपतायातुलबलवीर्यपराक्रमाय त्रिपञ्चनयनाय नानारूपाय नानाप्रहरणोद्यताय सर्वाङ्गरक्ताय भिन्नाञ्जनचयप्रख्याय श्मशान वेतालप्रियाय सर्वविघ्ननिकृन्तन-रताय सर्वसिद्धिप्रदाय भक्तानुकम्पिने असंख्यवक्त्रभुजपादाय तस्मिन् सिद्धाय वेतालवित्रासिने शाकिनीक्षोभ जनकाय व्याधिनिग्रहकारिणे पापभंजनाय सूर्यसोमाग्निनेत्राय विष्णु-कवचाय खंगवज्रहस्ताय यमदण्डवरुणपाशाय रुद्रशूलाय ज्वलज्जिह्वाय सर्वरोगविद्रावणाय ग्रहनिग्रहकारिणे दुष्टनागक्षय-कारिणे।

ऊं कृष्णपिंगलाय फट्। हूंकारास्त्राय फट्। वज्र-हस्ताय फट्। शक्तये फट्। दण्डाय फट्। यमाय फट्। खड्गाय फट्। नैर्ऋताय फट्। वरुणाय फट्। वज्राय फट्। ध्वजाय फट्। अंकुशाय फट्। गदायै फट्। कुबेराय फट्।

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com,
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

त्रिशूलाय फट्। मुद्गराय फट्। चक्राय फट्। पद्माय फट्। नागास्त्राय फट्। ईशानाय फट्। खेटकास्त्राय फट्। मुण्डाय फट। मुण्डास्त्राय फट्। कंकालास्त्राय फट्। पिच्छिकास्त्राय फट्। क्षुरिकास्त्राय फट्। ब्रह्मास्त्राय फट्। शक्त्यस्त्राय फट्। गणास्त्राय फट्। सिद्धास्त्राय फट्। पिलिपिच्छास्त्राय फट्। गन्धर्वास्त्राय फट्। पूर्वास्त्रायै फट्। दक्षिणास्त्राय फट। वामास्त्राय फट्। पश्चिमास्त्राय फट्। मंत्रास्त्राय फट्। शाकिन्यास्त्राय फट्। योगिन्यस्त्राय फट्। दण्डास्त्राय फट्। महादण्डास्त्राय फट्। नमोअस्त्राय फट्। सद्योजातास्त्राय फट्। हृदयास्त्राय फट्। महास्त्राय फट्। गरुडास्त्राय फट्। राक्षसास्त्राय फट्। दानवास्त्राय फट्। क्षौ नरसिंहास्त्राय फट्। त्वष्ट्रस्त्राय फट्। सर्वास्त्राय फट्। नः फट्। वः फट्। पः फट्। फः फट्। मः फट्। श्रीः फट्। पेः फट्। भुः फट्। भुवः फट्। स्वः फट्। महः फट्। जनः फट्। तपः फट्। सत्यं फट्। सर्वलोक फट्। सर्वपाताल फट्। सर्वतत्व फट्। सर्वप्राण फट्। सर्वनाडी फट्। सर्वकारण फट्। सर्वदेव फट्। ह्रीं फट्। श्रीं फट्। डूं फट्। स्त्रुं फट्। स्वां फट्। लां फट्। वैराग्याय फट्। मायास्त्राय फट्। कामास्त्राय फट्। क्षेत्रपालास्त्राय फट्। हुंकरास्त्राय फट्। भास्करास्त्राय फट्। चन्द्रास्त्राय फट्। विघ्नेश्वरास्त्राय फट्। गौः गां फट्। स्त्रों स्त्रौं फट्। हौं हों फट्। भ्रामय भ्रामय फट्। संतापय संतापय फट्। छादय छादय फट्। उन्मूलय उन्मूलय फट्। त्रासय त्रासय फट्। संजीवय संजीवय फट्। विद्रावय विद्रावय फट्। सर्वदुरितं नाशय नाशय फट्।

हमारे शास्त्रों में करोड़ो मंत्र हैं लेकिन हर मंत्र आपके लिए सही नही है। शिष्य के लिए कौन सा मंत्र सही है इसका निर्णय केवल गुरू ही कर सकता है। इसलिए आप केवल अपने आप को गुरू को समर्पित कर दीजिए, इसके बाद गुरू स्वयं आपको सही राह दिखायेगा।

यदि आपको हमारे द्वारा लिखे गये लेख पंसद है तो कृपया हमें अपनी ईमेल आईडी अवश्य भेजें । उसके पश्चात हमारे द्वारा लिखे सभी लेख हम आपको सीधे आपकी ईमेल पर ही भेज देंगें। हमारा ईमेल है - sumitgirdharwal@yahoo.com

People, who are unable to read the Hindi or Sanskrit & want to read our articles, please send your request for the English translation with the article name & its link to sumitgirdharwal@yahoo.com. Based on the number of request for the particular article we will try to translate it into English as soon as possible.

For Astrology, Mantra Diksha & Puja contact us.

Some of our books -

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

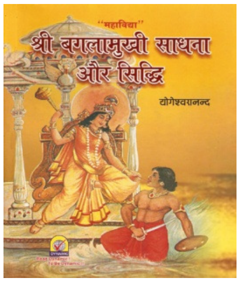

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com,
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

2. **Mantra Sadhana**

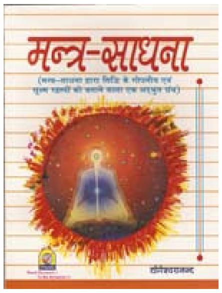

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

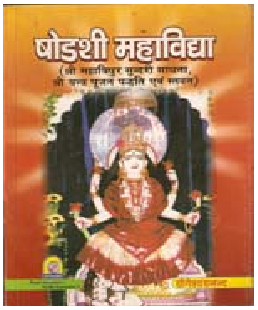

4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

श्री बगलामुखी साधना रहस्य का प्रकाशन जल्द ही किया जा रहा है। यह पुस्तक लगभग ७०० पृष्ठ की है जिसमें मां पीताम्बरा की साधना की पूर्ण विधि दी गयी है। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए Rs 680 नीचे लिखे अकाउण्ट में जमा करायें

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094

Support & Feedback

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content regarding Das Mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. We need your support to complete this task

Requirement -

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Font chanakya) or Microsoft Office (Font Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com,
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

卐 Vipreet Pratyangira Mantra Sadhna Evam Siddhi 卐

卐 श्री विपरीत प्रत्यंगिरा मंत्र साधना एवं सिद्धि 卐

Sumit Girdharwal Ji

9540674788, 9410030994

sumitgirdharwal@yahoo.com

www.baglamukhi.net

www.yogeshwaranand.org

यदि शत्रु निरंतर आप पर अभिचारिक कर्म कर रहा हो, निरंतर किसी न किसी रूप में आपको आर्थिक, मानसिक, सामाजिक, शारिरिक क्षति पहुंचा रहा हो और आपके भविष्य को चौपट कर रहा हो, तब भद्रकाली के इस स्वरूप, अर्थात विपरीत प्रत्यंगिरा का आश्रय लेना सर्वोत्तम उपाय है। जिस दिन से साधक इस महाविधा का प्रयोग आरम्भ करता है, उसी दिन से ही भगवती भद्र काली उसकी सुरक्षा करने लगती हैं और शत्रु द्वारा किये गये अभिचाारिक कर्म दोगुने वेग से उसी पर लौटकर अपना प्रहार करते

हैं। इसके अतिरिक्त राजकीय बाधा, अरिष्ट ग्रह बाधा निवारण में तथा अपना खोया हुआ पद, आस्तित्व ओर गरिमा प्राप्ति में भी यह विद्या सर्वोत्तम मानी जाती है। साधक की आयु, यश तथा तेज की वृद्धि करने में भी यह विद्या बहुत उत्तम मानी जाती है।

ध्यान

खड्गं कपालं डमरू त्रिशूलं,
सम्बिभ्रती चन्द्रकला वतंसा।
पिंगोर्ध्व-केशो-असित- भीम-दंष्ट्रा,
भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली।।

अर्थः- खडग, कपाल, डमरू तथा त्रिशूल धारण करने वाली देवी भद्र काली, जिनके मस्तक में चंद्रकला सुशोभित है, जिनके केश पीले तथा उपर को उठे हुए हैं और जिनके दांत बहुत ही भयंकर तथा असित रंग के हैं, वे मेरा कल्याण करें।

मूल मंत्र

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मां रक्ष-रक्ष मम शत्रून् भंजय-भंजय फे हुं फट् स्वाहा।"

मंत्र-विधान

विनियोगः- अपने दायें हाथ में जल लेकर निम्नलिखित विनियोग पढ़ें :-

ॐ अस्य श्री विपरीत-प्रत्यंगिरा मंत्रस्य भैरव-ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री विपरीत प्रत्यंगिरा देवता, ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे पाठे च विनियोगः।

विनियोग पढ़कर हाथ में लिया हुआ जल भूमि पर छोड़ दें। इसके बाद न्यास करें, यथा-

करन्यासः

ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः - बोलकर अपने दोनों अगूंठों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः - बोलकर दोनों अंगूठों से तर्जनी उंगली का स्पर्श करें (Touch First Finger)

ॐ श्री मध्यमाभ्यां नमः- मध्यमां उंगली को छुएं (Touch Middle Finger)

ॐ प्रत्यंगिरे अनामिकाभ्यां नमः- अनामिका उंगली को छुएं (Ring Finger)

ॐ मां रक्ष-रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः- सबसे छोटी उंगली को छुएं (Touch Little Finger)

ॐ मम शत्रून भंजय-भंजय करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः - सबसे पहले दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में मिलाएं फिर उनके पिछले भागों का स्पर्श करें।

इसी प्रकार हृदय आदि न्यास करें-

ॐ ऐं हृदयाय नमः - हृदय का स्पर्श करें

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा - सिर का स्पर्श करें

ॐ श्री शिखायै वषट् - शिखा का स्पर्श करें

ॐ प्रत्यंगिरे कवचाय हुं - एक साथ बायें हाथ से दायें कंधें का एवं दायें हाथ से बायें कंधें स्पर्श करें
ॐ मां रक्ष-रक्ष नेत्र-त्रयाय वौषट् - नेत्रों का स्पर्श करें
ॐ मम शत्रून भंजय-भंजय अस्त्राय फट् - दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा उंगली से बायें हाथ की हथेली पर तीन बार ताली बजायें

दिग्बंधनः- ॐ भूर्भुव स्वः मंत्र से अपनी देह की रक्षा हेतु दिशाओं का बंधन करना होता है। मंत्र पढ़ते हुए दशों दिशाओं में चुटकी बजांए।

इसके उपरान्त भगवती प्रत्यंगिरा के मूल मंत्र का जप करें -

मूल मंत्र

“ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मां रक्ष-रक्ष मम शत्रून् भंजय-भंजय फे हुं फट् स्वाहा।”

अपने गुरू देव से इस मंत्र की दीक्षा प्राप्त करें एव उसके पश्चात जप प्रारम्भ करें ।

Books written by Shri Yogeshwaranand Ji

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

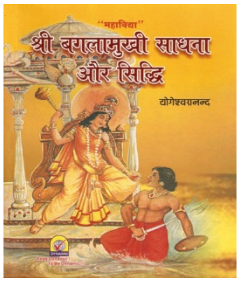

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

2. **Mantra Sadhana**

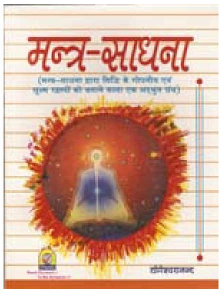

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

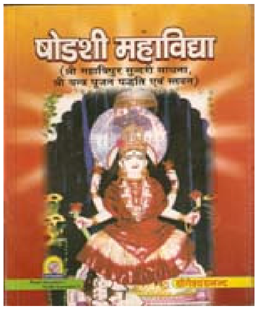

4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya is the upcoming book of my father and my guru Shri Yogeshwaranand Ji on Ma Baglamukhi. Only limited copies of this book are going to be published. If you want to secure your copy before all sold out please make a payment of Rs 680 into the below A/C
Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094
After payment send your complete address and payment receipt to shaktisadhna@yahoo.com & sumitgirdharwal@yahoo.com. For more details please call on +91-9540674788, 91-9410030994

Feedback & Support

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content provided by Shri Yogeshwaranand Ji regarding das mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. I can't do it alone. I request all of you to help me achieve this goal.

Requirement

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Preferable font chanakya) or Microsoft Office (Font Used Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

My dear readers! Very soon We are going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at sumitgirdharwal@yahoo.com Thanks